प्रकृति आधारित उद्यम और सीमांत किसानों और महिलाओं हेतु रोजगार विकल्प

राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन परियोजना अंतर्गत पश्चिमी रामगंगा दूधातोली क्षेत्र में कार्य

राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन के तहत लघु खेती वाले किसान और अधिक श्रम करने वाली उत्तराखण्ड की ग्रामीण महिलाओं पर केंद्रित यह परियोजना कुमाऊँ और गढ़वाल मंडल में संचालित की गई है। मध्यम अनुदान की यह योजना चौखुटिया स्थित हिमालयी पर्यावरण शोध एवं शिक्षा संस्थान (इनहेयर) द्वारा पश्चिमी रामगंगा के उद्गम क्षेत्र में संचालित है। परियोजना के तहत चमोली जनपद के 20 गांवों को केंद्रित किया गया और 5 क्लस्टरों में 1609 से परिवारों को लक्षित किया गया।

वर्ष 18 से शुरू इस परियोजना में प्राकृतिक संसाधन आधारित विविध उद्यमों को नवीन विधि से संचालित कर अपेक्षित परिणाम दिए गए हैं। परियोजना के तहत ग्रामीण परिस्थितियों में जनसहभागिता से हस्तशिल्प, मुर्गी, मछली पालन और वनीकरण, खाद्य प्रसंकरण , जैविक सब्जी उत्पादन सहित अनेक नए उद्यमों को बाजार की और समय की जरूरतों के अनुरूप किया गया और इसके अनुकरणीय परिणाम भी दृष्टिगोचर हो रहेहैं।

परियोजना के तहत अधिकांश गांव आज खेती में तरल खाद का उपयोग करने लगे हैं। इसके लाभ, बनाने की विधि सीखने के बाद ग्रामीणों ने जैविक खेती को अपनाने का निर्णय लिया और लगभग 500 परिवार आज 475 नाली भूमि में प्राकृतिक रूप से तैयार जैविक खाद का प्रयोग कर रहे हैं। पूर्व में ग्रामीणों को भूमि उपचार के लिए परियोजना के तहत जैविक ट्राईकोडर्मा और स्यूडोमोनास का उपयोग भी कराया गया। परियोजना के तहत ग्रामीण महिलाओं को लहसुन , छांछ व टमाटर की पत्तियों तथा मिर्च से जैविक कीटनाशक तैयार करना भी सिखाया गया है। पहाड़ में चारे की कमी को दूर करने के लिए क्षेत्र में एक दर्जन से अधिक गांवों में नैपियार, जैसी घास प्रजाति का रोपण खेतों मेढों कराया गया जिससे न केवल उनकी गर्मी के काल में चारे की कमी दूर हुई वरन् स्थानीय दूधातोली वन में उनकी निर्भरता भी कम हुई साथ ही जल संरक्षण की दिशा में भी काम हुआ। खेती को लाभकारी बनाने के लिए बीज बोने की वैज्ञानिक तकनीक से ग्रामीणों को अवगत कराया गया। परियोजना कर्मियों द्वारा 10 से अधिक गांवों में स्वयं जाकर बीज बोने की तकनीक को ग्रामीणों को सिखाया। पंक्तिबद्ध, श्री विधि, मिश्रित खेती आदि से कृषकों को प्रायोगिक तौर पर अवगत कराया गया। बीजों को गुणवत्ता में सुधार हेतु उन्हें सोलर ड्रायरों से सुखाने के प्रशिक्षण के साथ उनके बीच इन ड्रायरों का प्रदर्शन किया गया। विभिन्न स्थानों से एकत्र उन्नत बीज को भी उनके बीच वितरित किया गया। लघु उपकरणों के साथ लाईन मेकर, क्रॉप कटर, मिलेट थ्रेसर, सीड स्पाईरल ग्रेडर, पावर टिलर आदि नवीन उपकरणों को स्थानीय कृषकों ने न केवल उपयोग किया और उन्हें अपनाया भी।

वर्षा आधारित क्षेत्र में सब्जी और बागवानी को भी परियोजना के तहत प्रोत्साहित किया गया। पहली बार क्षेत्र में एकीकृत सब्जी उत्पादन इकाईयों को स्थापित किया गया। अब क्षेत्र में किसान जैविक कृषि से अपनी आजीविका संचालित करने लगे है। एक प्रयोग के तौर पर दाल व मसालों में धूल मिटटी हटाने के लिए विशेष प्रकार की लकड़ी की जाली का भी उनके बीच प्रदर्शन किया गया। वहीं स्थानीय प्राकृतिक स्रोत्तों से जल संयोजन के कारण न केवल वे सब्जी उत्पादन कर रहेहैं वरन् उनके पशुधन के लिए भी यह लाभकारी सिद्ध हो रहा है।

इसमें अधिक से अधिक सिंचाई टैंक, स्प्रिंकल उपकरणों, पॉलीटनलों, वर्मीकंपोस्ट, पौध नर्सरी भी स्थापित किए गए।

ग्रामीणों के कृषि कार्य के श्रम को कम करने के उद्देश्य से उनके बीच सहायक कृषि यंत्रों का भी प्रदर्शन किया गा। केवल पशुओं के पोषाहार में उपयोग होने वाला झंगोरा, मंडुवा (रागी) थ्रेसिंग मशीन लगने से अब ग्रामीणों के खाद्य का मुख्य भाग बनने लगा है। वहीं मृदा की सही पहचान करने व मौसम चक्र व वायुमण्डल के अनुरूप खेती की रणनीति बनाने के सहायक ज्ञान को भी ग्रामीणों से साझा किया गया।

परियोजना अनुसंधान में यह स्पष्ट रेखांकित है कि , पहाड़ों में मृदा सुधार, बीज सुधार और संरक्षण, तथा जैविक पद्धतियों तथा उन्नत कृषि पद्धतियों के अभाव में कृषि पर्वतीय हतोत्साहित है। इन उपचारों के साथ जल संरक्षण और नई फसलों को प्रोत्साहित कर कृषि को लाभकारी बनाने से यह स्थानीय ग्रामीणों को आत्मनिर्भरता की ओर ले जा सकती है।

मनोज माहेश्वरी, परियोजना प्रमुख, इनहेयर

बागवानी में रूचि लेने वाले ग्रामीणों के बीच अखरोट, पुलम जैसे फल पौधों का वितरण गया गया। क्षेत्र में 16 गांवों में 616 नाली से अधिक भूमि में ग्रामीण अब तक 2 हजार से अधिक अखरोट और लगभग 1700 पुलम के पेड़ सफलतापूर्वक रोपित कर चु के हैं।

चाय प्रसंस्करण का प्रशिक्षण देकर स्थानीय गांवों में चाय बोर्ड के सहयोग से 4 हजार से अधिक चाय के पौधे रोपे जा चुके हैं, क्षेत्र में बड़ी मात्रा में नींबू, माल्टा व गुठलीदार फल प्रजातियों का पौध रोपण भविष्य में इस क्षेत्र में फल प्रसंकरण से रोजगार का एक नया विकल्प होगा और प्राकृतिक संसाधनों को सतता मिलेगी। वहीं उन्नत क्षेत्र में ऊंचाई वाले क्षेत्रों में हस्तशिल्प को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से रिंगाल के 700 से अधिक पौधे क्षेत्र में रोपित किए गए।

यहां के हस्तशिल्पी आज 10 से अधिक उच्चकोटी से उत्पाद जैसे रिंगाल के कटोरे, फल टोकरी, डायनिंग टेबल बासकेट, पेन स्टैण्ड, डस्टबिन, नेपाली डोका, कैसरोल, फूलदान आदि बनाकर गांव सतर पर आय अर्जित कर रहे हैं। इसके लिए आईडीसी मुंबई से आधुनिक उपकरण लाकर हस्तशिल्पियों को दिए गए। इन उत्पादों में वे प्राकृतिक रंगों को उपयोग कर रहे हैं। उनके द्वारा स्थानीय स्तर पर रिंगाल कार्य हुए स्वयं हथौड़े भी विकसित किए गए हैं।

मुर्गीपालन में रूचि रखने वाले ग्रामीणों के बीच 2 हजार से अधिक मुर्गी चूजे परियोजना के तहत वितरित कर उन्हें लघु स्तर पर मुर्गी पालन , टीककरण और पोषण का प्रशिक्षण भी दिया गया है। आज 13 गांवों के ग्रामीण बड़ी संख्या में इसे अपनी आजीविका का माध्यम बना चुके हैं। 2000 से अधिक चूजों को वितरित कर क्षेत्र में 63 उद्यमियों को प्रशिक्षण देकर इस कार्य से जोड़ दिया गया है। क्लस्टर स्तर पर 150 चूजों के बाड़े तैयार कर स्थानीय स्तर पर बिक्री की जा रही है।

परियोजना के तहत स्थानीय मोटे अनाज के उत्पादन और उपयोग को प्रोत्साहित किया गया है। स्थानीय झंगोरा, मंडुवा, जौं और भटट आदि सोयाबीन, आदि से अनेक उत्पाद तैयार कर महिला समूहों ने उसे अपनी आजीविका से जोड़ा। आज अनेक महिला समूह भारतीय खाद्य प्रमाणन प्रमाण पत्र के साथ आत्मविश्वास से लैस होकर इन उत्पादों को बेचने लगी हैं।

वहीं महिला समूहों के बीच खाद्य प्रसंकरण को प्रोत्साहित करते हुए उन्हें फलों और सब्जियों तथा स्थानीय मसालों, दालों, फलों खासकर, अदरख, मिर्च, बुरांश, नींबू, माल्टा आदि के साथ चाय व बिस्कुट से उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। विभिन्न प्रकार के अचार और जूस उत्पादित कर स्थानीय गांवों की महिलाएं आज 15 से अधिक उत्पाद तैयार कर आय अर्जित कर रही है। महिला समूहों द्वारा मंडुआ, सोयाबीन, भटट आदि से विभिन्न प्रकार के बिस्कुट और नमकीनें तैयार की जा रही है। स्थानीय चौलाई से तैयार लड्डूओं ने महिलाओं को नई पहचान दी और आज वे स्कूलों और आंगनबाड़ी केंद्रों में इन लड्डूओं का विपणन कर रही है। रामगंगा रूट्स ब्राण्ड के तहत हिमुली वेबसाईट से वे अपने उत्पादों को प्रचारित भी कर रही है।

कृषि और उसकी सहायक गतिविधियों पर अब तक अनेक प्रकाशन भी इनहेयर द्वारा किए जा चुके हैं और स्थानीय स्तर पर मेलों और संस्कृतिक गतिविधियों को एक कलेण्डर भी तैयार किया गया है। ग्रामीण आजीविका को संवर्धित करने के लिए परियोजना संचालक नित नए सफल प्रयोगों और उदाहरणों को ग्रामीणों के बीच प्रयोग में लाने का प्रयास कर रहे हैं। गॉवों को जैविक गांवों का प्रमाण पत्र से मिलने से भविष्य में इन गॉवों के निर्यात उन्मुखी उत्पाद ग्रामीणों को अधिक लाभ देंगे।

गांव स्तर पर मानव संसाधन और उसकी आजीविका के स्रोतों का आकलन कर यहां उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के सतत् प्रबंधन की दिशा में परियोजना द्वारा परिणाम मूलक कार्य किया है। महिला केंद्रित उद्यमों को प्रोत्साहित कर स्थानीय उत्पादों को प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन कर उनका क्षमता निर्माण करने को यह प्रयोग अनुसरणीय है।

इं. किरीट कुमार, नोडल अधिकारी, राष्ट्रीय हिमालयी अध्ययन मिशन